B.M.A. College, Baheri Darbhanga
Date
B.A (Hons) - Part - I
By Raj
Paper - II (Social Thinkers)
Deptt. of Sociology

विषय:- दुर्खीम का समाज में श्रम-वि[भाजन का] सिद्धांत

दुर्खीम ने समाज में श्रम-विभाजन सिद्धांत" अपनी प्रसिद्ध कृति "The Division of Labour in So[ciety]" ... है। दुर्खीम श्रम-विभाजन को सामाजिक परिवर्तन का ... मानते हैं। श्रम विभाजन की अनिवार्यता के आधार ... मानव की सभ्यता एव विकास को समझाने ... में श्रम-विभाजन लिंग-भेद (स्त्री और पुरुष के ...) आयु-भेद के आधार पर रहा होगा।

इनका कहना है कि जनसंख्या के आकार एव ... मानवीय आवश्यकताओं की विभिन्नता और ... विभाजन को जन्म दिया। जब जनसंख्या बढ़ी- एव घनत्व में वृद्धि हुई तो समाज में नवीन आ[वश्यकताएँ] पैदा हुई जिसकी पूर्ति हेतु श्रम-विभाजन की एक ... इनके अनुसार जनसंख्या के आकार में तथा नैतिक घनत्व में वृद्धि ने श्रम विभाजन को उत्प[न्न] ...

इनका यह भी कहना है कि श्रम-विभाजन [illegible] में नए वर्गों को जन्म होता है जिसमें पारस्परिक ... उत्पन्न होता है। यह विशेषीकरण को भी जन्म ... जिससे समाज में विभिन्नताएं बढ़ जाती हैं एवं ... का जन्म होता है। दुर्खीम ने श्रम विभाजन के नए स्वरूपों का भी उल्लेख किया है। जो विघटन उत्पन्न करता है। वे इसे एक अनिवार्य ... भी मानते हैं जो निरन्तर विकास की ओर ... एक प्रक्रिया है। यह समाज में विभिन्न प्रकार ... एकता को भी जन्म देता है। वे दो प्रकार के ... विभाजन की बात करते हैं:-

1. यांत्रिक एकता - प्राचीन समाज में जब श्रम-[विभाजन] लिंग-भेद एव आयु-भेद के आधार पर ... तब समाज सरल एव छोटे थे।
2. सावयवी एकता - जनसंख्या की वृद्धि के कारण ... समाजों में जिस प्रकार की एकता पाई जाती है ... दुर्खीम सावयवी एकता कहते हैं।

B.M.A. College, Baheri, Darbhanga
B.A. I (Gen. Sub. Hons.) Paper-I
Deptt of Sociology
Subject - Sociology
Date 17/04/2020
By: Dr. Rakesh Kr.
Sociology

विषय:- समाजीकरण एवं उसकी विशेषताएँ

समाजीकरण एक जन्म से लेकर मृत्यु पर्यंत चलने वाली प्रक्रिया है। जब बच्चा जन्म लेता है तो वह सिर्फ एक हाड़-मांस का बना पुतला होता है यानि कि वह सिर्फ एक जैविक प्राणी होता है। धीरे-धीरे बच्चे को समाजीकरण के माध्यम से मानवीय एवं सामाजिक प्राणी बनाने का प्रयास किया जाता है ताकि वह समाज में रहने के योग्य बन सके। समाजीकरण के माध्यम से वह चलना, बोलना, व्यवहार करना, अपनों को पहचानना, समाज के रीति-तरीकों को सीखना, एवं दूसरों का अनुकरण करना सीखता है। बच्चा एक जैविकीय प्राणी से सामाजिक प्राणी में परिवर्तित होता है, जिसका कि समाज के लोग उम्मीद करते हैं।

गिलिन एवं गिलिन के अनुसार "समाजीकरण से तात्पर्य उस प्रक्रिया से है जिसके द्वारा व्यक्ति समूह में एक क्रियाशील सदस्य बनता है, समूह के कार्यों में समन्वय स्थापित करता है और सामाजिक परिस्थितियों से अनुकूलन करके अपने परिवार और समाज के प्रति सहनशीलता की भावना विकसित करता है।"

समाजीकरण की कुछ निम्न विशेषताएँ हैं:-

- समाजीकरण एक सीखने की प्रक्रिया है जो जन्म से लेकर मृत्यु तक चलती है।
- समाजीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से व्यक्ति मूल्यों, विश्वासों, प्रथाओं, परंपराओं, व्यवहार के ढंगों, भौतिक वस्तुओं के प्रयोग एवं विभिन्न प्रकार की मनोवृत्तियों को सीखता है।
- अनुकरण की प्रक्रिया के माध्यम से वह एक-दूसरे की क्रियाओं को समझते हुए उस व्यवहार को सीखता है।
- समाजीकरण एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है।
- समाजीकरण से व्यक्ति के अंदर स्व का विकास होता है।
- समाजीकरण की प्रक्रिया से व्यक्ति में अनुकूलन का गुण विकसित होता है।
- समाजीकरण एक सार्वभौमिक प्रक्रिया है। जिसका तात्पर्य यह है कि समय एवं स्थान के अनुसार इसमें परिवर्तन देखने को मिलता है। जैसे:- मुस्लिम समुदायों एवं अन्य समुदायों में समाजीकरण की प्रक्रिया अलग-अलग है। प्रत्येक समाजों में समाजीकरण के अलग-अलग प्रतिमान होते हैं